पुस्तक समीक्षा-

लघुकथा की नई नवेली बगिया " नई सदी की लघुकथाएं "

समीक्षक- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

लघुकथा का जन्म भारत में ही हुआ. इस का आरंभिक रूप विद्रोही था . स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में उपजी कुव्यवस्था, जिस में भ्रष्टाचार का बोलबाला होने लगा था उस के दंश को बताने के लिए इसका उद्भव हुआ था. यानी व्यवस्था की विसंगति के इस रूप को बताने के लिए गद्य के लिए सूत्रशैली (कसावट के प्रारूप) में एक साहित्यिक विधा की जरुरत महसूस हुई. वह विधा साहित्यिक इस विसंगति व विद्रूपता को तीक्ष्ण रूप में कथा में पिरोकर उसे दंश के रूप में अभिव्यक्त कर सके. इसी के सूत्रपात के लिए इस विधा का विकास उस समय के प्रगतिशील साहित्यकारों ने किया था.

उन्हों ने उस समय इस नई कथा शैली का प्रायोगिक तौर पर उपयोग किया . जिस में देश में बढ़ती हुई रिश्वतखोरी, भाई भतीजावाद, पुलिस के अत्यचार, भ्रष्टाचार, दोहरे मापदंड, जमीनी व्यवस्था, यौनशोषण, दहेजप्रथा जातिव्यवस्था पाखंड आदि पर इस तरह लिखा गया कि वह पाठक को सोचनेसमझने और उस पर विचार करने के लिए मजबूर करे. इस शैली का पाठकों ने जम कर स्वागत किया.

लघुकथा, लघु कहानी के समांतर रूप में एक अलग तेवर के साथ में विकसित हुई थी . जहां कहानी एक समस्या को समाधान के रूप में इंगित करते हुए चलती थी, वहीं इस नई शैली की कथा (लघु कहानी से अलग इस विधा) ने समस्या या विसंगति का यथास्थिति चित्रित कर के पाठकों को सोचने समझने को विवश करने वाली शैली के रूप में अपना विकास किया. इस तरह विकसित शैली लोगों को लुभाने लगी. फलस्वरूप् यह शैली लघुकथा के रूप में विकसित होती चली गई.

कालांतर में इसे रचनाकार साथियों ने लघु कथा से इतर एक विधा के रूप में विकासित किया. जो लघु कथा और लोककथा से लघुकथा के रूप में आगे बढ़ते हुए आज की स्थिति तक पहुंची हैं. उसी प्रारूप पर प्रकाश डालते हुए संपादकीय व भूमिका वाली यह पुस्तक "नई सदी की लघुकथाएं" अपने विशेष रूप में सभी पाठकों के सम्मुख पूरी साजसज्जा के साथ उपस्थित हुई है.

प्रस्तुत पुस्तक नई सदी के लघुकथाकार की नई पीढ़ी को समर्पित होकर तीन खंडों में प्रकाशित की गई है. जिस का सम्पादन प्रसिद्ध लघुकथाकार अनिल शूर आज़ाद ने किया हैं. इस पुस्तक के प्रथम खंड में परंपरागत रूप से जुड़े लघुकथाकारों की लघुकथाओं को सम्मिलित किया गया है .जिस के अंतर्गत सूर्यकांत नागर, शंकर पुणतांबेकर, सतीश दुबे, जगदीश कश्यप, रूप देवगुण, उर्मिकृष्ण, सतीश राज पुष्करणा, कमल चौपड़ा, मधुकांत, विकेश निझावन, कमलेश भारतीय सहित अनेक लघुकथाकरों की श्रेष्ठ लघुकथाओं को इस में सम्मिलित किया गया है.

द्वितीय खंड में नई सदी के लघुकथाकारों की लघुकथाएं संकलित की गई है . जिस में वर्तमान के चर्चित लघुकथाकार मार्टिन जान, पवन जैन, सविता गुप्ता, सविता मिश्रा, पंकज शर्मा, चंद्रेश कुमार छतलानी, ज्योत्स्ना कपिल, संदीप तोमर, ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश', वीरेंद्र वीर मेहता, त्रिलोक सिंह ठकुरेला, गीता कैथल, विजयानंद विजय, विभा रानी श्रीवास्तव, जगदीश राय कुलरिया सहित अनेक लघुकथाकारों की लघुकथाएं सम्मिलित की गई है.

तृतीय खंड में "आधुनिक हिंदी लघुकथा शोध" के नाम से - विविध जानकारी पूर्ण सामग्री एकत्रित की गई है . पुस्तक की साजसज्जा सुंदर है. फॉन्ट आकर्षक व बेहतरीन हैं. उगते हुए सूर्य के प्रकाश से अंकुरित होती हुई पौध से सज्जित आवरण पुस्तक के नाम को सार्थक करता हुआ बहुत सुंदर लगाया गया है. पुस्तक का सामग्री चयन उत्तम है. वही विविध लघुकथाएँ आकर्षक बन पड़ी है.

लघुकथा की भाषा लघुकथाकार के अनुरूप बेहतरीन व उपयुक्त हैं. कुशल संपादन के कारण पुस्तक त्रुटि रहित तथा बेहतर बन पड़ी है . क्यों कि संकलित लघुकथाएं संपादक द्वारा आयोजित प्रतियोगिता और उस के बाद चयनित हुई लघुकथा का संकलन है.

इस संकलन में प्रतिष्ठित और नवोदित लघुकथाकारों को एक साथ प्रस्तुत कर उत्तम कार्य किया है . इस के बावजूद इस में सम्मिलित सभी लघुकथाएं अत्यंत उपयोगी है . इस पुस्तक की इसी उपयोगिता के कारण पाठक इसे खुले दिल से स्वागत करेंगे .इस की उपयोगिता और पृष्ठ संख्या देखते हुए दाम भी वाजिब है.

पुस्तक- " नई सदी की लघुकथाएं "
संपादक- डॉ अनिल शूर आजाद
संपर्क- 09871357136
नवशीला प्रकाशन, 75- श्री राम कॉलोनी निलोठी एक्सट नांगलोई , नई दिल्ली -110041
संस्करण -प्रथम 2018
पृष्ठ संख्या - 128
मूल्य -₹200 पेपर बेक